Volume: 4 Issue: 12 Pages: 169-171

चरित्र निर्माण में भारतीय ज्ञान परम्परा की भूमिका

[*1] डॉ. यशवंत सिंह एंव [2]डॉ. प्रमोद कुमार राजपूत

[*1] सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

[2] सह प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (SJIF): 6.876
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 23/Nov/2025
Accepted: 19/Dec/2025

***Corresponding Author**
डॉ. यशवंत सिंह
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, श्री रावतपुरा सरकार विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
भारतीय ज्ञान परम्परा में निहित नैतिक-धार्मिक सिद्धांतों को आधुनिक शैक्षिक संदर्भ में पुनःस्थापित करने की आवश्यकता को समझते हुए, इस शोध में केवल गुणात्मक (qualitative) विधि अपनाई गई है। अध्ययन के मुख्य उद्देश्य हैं: (1) भारतीय ज्ञान परम्परा के ऐतिहासिक-दर्शनिक स्वरूप का विश्लेषण, (2) प्राचीन ग्रंथों एवं शिक्षा-पद्धतियों में चरित्र-निर्माण के तत्वों की पहचान, (3) वर्तमान शैक्षिक एवं सामाजिक संदर्भ में इन तत्वों की प्रासंगिकता का मूल्यांकन, तथा (4) चरित्र-निर्माण की चुनौतियों के समाधान में भारतीय ज्ञान परम्परा के मूल सिद्धांतों की भूमिका को स्पष्ट करना। डेटा संग्रह में 12 विद्यालयों के 24 शिक्षकों के गहन साक्षात्कार, 6 फोकस-ग्रुप चर्चा, तथा प्रमुख ग्रंथों (वेद, उपनिषद, मनुस्मृति, शास्त्र) का पाठ्य-विश्लेषण शामिल है। थीमैटिक विश्लेषण के माध्यम से पाँच प्रमुख थीम उभरे: धर्म-आधारित नैतिकता, आत्म-संयम, सेवा-भावना, सत्य-परायणता, और सामाजिक सामंजस्य। परिणाम दर्शाते हैं कि भारतीय ज्ञान परम्परा के मूल सिद्धांत वर्तमान चरित्र-निर्माण प्रक्रिया में गहन प्रेरणा स्रोत हैं, परन्तु शिक्षकों की प्रशिक्षण एवं पाठ्यक्रम में एकीकरण की कमी प्रमुख बाधा है।

मुख्य शब्द: भारतीय ज्ञान परम्परा,नैतिक-धार्मिक सिद्धांत,चरित्र-निर्माण,गुणात्मक शोध विधि,शैक्षिक प्रासंगिकता

1. प्रस्तावना Introduction

समकालीन भारतीय शिक्षा प्रणाली, वैश्विकीकरण और तकनीकी उन्नति के दौर में, ज्ञान-आधारित कौशलों पर अत्यधिक जोर देती है। राष्ट्रीय शैक्षिक नीति (NEP 2020) भी "विज्ञान-आधुनिकता के साथ भारतीय मूल्यों का समन्वय" करने की बात कहती है, परन्तु वास्तविक कक्षा-प्रयोग में नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का समावेश अभी भी अधूरा है।

चरित्र निर्माण, अर्थात् "धर्म, सत्य, अहिंसा, सेवा, आत्म-संयम" जैसे मूल्यों का विकास, शिक्षा का वह मूलभूत उद्देश्य है जिसे प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा ने हमेशा प्राथमिकता दी है। वेद, उपनिषद, मनुस्मृति, शास्त्र एवं प्राचीन गुरुकुल प्रणाली में यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि शिक्षा केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि मन-और-हृदय के समग्र विकास की प्रक्रिया है।

इस शोध का मुख्य प्रश्न यह है कि वर्तमान शैक्षिक व सामाजिक संदर्भ में भारतीय ज्ञान परम्परा के सिद्धांत किस प्रकार चरित्र निर्माण में योगदान दे सकते हैं? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये हम केवल गुणात्मक (qualitative) विधि अपनाते हैं, जिससे ग्रंथीय ज्ञान और शिक्षकों के अनुभवों का गहन विश्लेषण संभव हो सके।

2. साहित्य समीक्षा (Literature Review)

2.1 भारतीय ज्ञान परम्परा का दार्शनिक-ऐतिहासिक स्वरूप

- वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) में "रता" (सत्य) और "धर्म" को जीवन के मूल मानदण्ड के रूप में वर्णित किया गया है (त्रिपाठी, 2021)।
- उपनिषद आत्म-ज्ञान (आत्मा-ब्रह्म) को मानव जीवन का परम लक्ष्य मानते हैं, जिससे आत्म-संयम और वैराग्य की शिक्षा मिलती है (शर्मा, 2022)।
- मनुस्मृति सामाजिक कर्तव्य (धर्म) और नैतिक नियमों को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करता है, जो सामुदायिक जीवन में नैतिकता का आधार बनते हैं (मुखर्जी, 2019)।

2.2 चरित्र निर्माण में प्राचीन ग्रंथों के योगदान

- धर्म-शिक्षा: मनुस्मृति के "धर्म" सिद्धांत को आधुनिक नैतिक शिक्षा के समकक्ष माना गया है (पटेल, 2020)।
- अहिंसा और सत्य: महात्मा गांधी ने इन सिद्धांतों को राष्ट्रीय आंदोलन में लागू किया, जिससे यह सिद्ध हुआ कि नैतिक सिद्धांत सामाजिक परिवर्तन के साधन बन सकते हैं (गुप्ता, 2018)।

- सेवा-भावना: "सेवा" को गुरुकुल प्रणाली में शिष्यों के दैनिक कर्तव्य के रूप में देखा जाता था, जिससे सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती थी (राव, 2021)।

2.3 आधुनिक शिक्षा में भारतीय मूल्यों का समावेश-अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय दृष्टिकोण

- UNESCO (2023) की "Values-Based Education" रिपोर्ट में कहा गया है कि सांस्कृतिक मूल्यों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने से छात्रों की सामाजिक सहभागिता और सहिष्णुता में वृद्धि होती है।
- NEP 2020 ने "भाषा, संस्कृति और मूल्य शिक्षा" को प्रमुख स्तम्भ बनाया है, परन्तु अभी तक इसे लागू करने के लिए स्पष्ट मार्गदर्शन की कमी है (सरकार, 2022)।

2.4 शिक्षकों की भूमिका और प्रशिक्षण

- कई अध्ययन दर्शाते हैं कि शिक्षकों की स्वयं की मूल्य प्रणाली और प्रशिक्षण का स्तर सीधे छात्रों के नैतिक विकास को प्रभावित करता है (सिंह & वर्मा, 2020)।
- विशेष रूप से, भारतीय ज्ञान परम्परा के सिद्धांतों को समझने और उन्हें कक्षा में लागू करने हेतु शिक्षकों को कार्यशालाओं और सह-शिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता है (दास, 2019)।

2.5 शोध अंतराल

अधिकांश मौजूदा कार्य ग्रंथीय विश्लेषण या मात्रात्मक सर्वेक्षण पर आधारित हैं। इस शोध में गुणात्मक दृष्टिकोण से शिक्षकों के वास्तविक अनुभवों को गहराई से समझा जाएगा, जिससे यह पता चल सके कि भारतीय ज्ञान परम्परा के सिद्धांत कक्षा-प्रयोग में कैसे जीवंत होते हैं और किन बाधाओं का सामना करते हैं।

3. उद्देश्य (Objectives)

1. भारतीय ज्ञान परम्परा के ऐतिहासिक एवं दार्शनिक स्वरूप का विश्लेषण करना।
2. भारतीय शिक्षा प्रणाली एवं ग्रंथों के माध्यम से चरित्र निर्माण संबंधी तत्वों की पहचान करना।
3. वर्तमान शिक्षा और सामाजिक संदर्भ में भारतीय ज्ञान परम्परा के महत्व एवं संभावनाओं का मूल्यांकन करना।
4. चरित्र निर्माण की प्रक्रिया में आने वाली चुनौतियों तथा उनके समाधान हेतु भारतीय ज्ञान परम्परा के मौलिक सिद्धांतों की भूमिका स्पष्ट करना।

4. अनुसंधान विधि (Methodology)

4.1 शोध डिज़ाइन – गुणात्मक, वर्णनात्मक-विश्लेषणात्मक।

4.2 डेटा संग्रह

साक्षात्कार: 24 शिक्षकों (12 पुरुष, 12 महिला) के गहन साक्षात्कार, प्रत्येक 45-60 मिनट।

फोकस-ग्रुप चर्चा: 6 समूह, प्रत्येक में 6-8 शिक्षक, कुल 40 प्रतिभागी।

पाठ्य-विश्लेषण: वेद, उपनिषद, मनुस्मृति, शास्त्रों के चयनित भागों का कोडिंग।

4.3 डेटा विश्लेषण

साक्षात्कार एवं चर्चा की ट्रांसक्रिप्ट को NVivo-12 में आयात कर थीमैटिक विश्लेषण किया गया।

बार-बार उभरने वाले कोड को समूहित कर पाँच मुख्य थीम निर्धारित किए गए।

4.4 विश्वसनीयता एवं वैधता

त्रिकोणीयकरण (डेटा स्रोतों का मिश्रण) द्वारा विश्वसनीयता बढ़ाई गई।

प्रतिभागियों को प्रतिलिपि (member checking) के लिए वापस भेजकर सत्यापन किया गया।

5. परिणाम (Findings)

5.1 थीम 1 – धर्म-आधारित नैतिकता

सभी शिक्षकों ने कहा कि "धर्म" को समझना उनके दैनिक शिक्षण में नैतिक दिशा प्रदान करता है। एक शिक्षक ने कहा, "धर्म हमें सही-गलत का मानक देता है, जिससे बच्चों में नैतिक निर्णय क्षमता विकसित होती है।"

5.2 थीम 2 – आत्म-संयम

उपनिषद के "अनुशासन" की बात कई प्रतिभागियों ने उठाई। एक महिला शिक्षिका ने बताया, "आत्म-संयम के बिना ज्ञान अधूरा है; मैं कक्षा में इसे मॉडल करके दिखाती हूँ।"

5.3 थीम 3 – सेवा-भावना

मनुस्मृति के "सेवा" सिद्धांत को सामाजिक कार्य में जोड़ते हुए, कई शिक्षकों ने स्कूल-समुदाय परियोजनाओं का उल्लेख किया।

5.4 थीम 4 – सत्य-परायणता

वेद के "सत्यमेव जयते" को शिक्षण में लागू करने के अनुभव साझा किए गए।

5.5 थीम 5 – सामाजिक सामंजस्य

ग्रंथों में वर्णित "वसुधैव कुटुम्बकम्" को विविधता-भरे कक्षा में लागू करने की कोशिशें बताई गईं।

इन थीमों के आधार पर यह स्पष्ट हुआ कि भारतीय ज्ञान परम्परा के मूल सिद्धांत शिक्षकों के व्यक्तिगत मूल्य प्रणाली में गहराई से जुड़े हैं, परन्तु उन्हें औपचारिक पाठ्यक्रम में व्यवस्थित रूप से नहीं जोड़ा गया।

6. चर्चा (Discussion)

गुणात्मक डेटा से प्राप्त पाँच थीम भारतीय ज्ञान परम्परा के उन मूलभूत सिद्धांतों को उजागर करती हैं, जो चरित्र निर्माण में सहायक हो सकते हैं। यह परिणाम पूर्व के साहित्य (शर्मा, 2022; UNESCO, 2023) के साथ संरेखित है, जो मूल्य-आधारित शिक्षा की आवश्यकता पर बल देते हैं।

परिणामों की विस्तृत चर्चा

1. धर्म-आधारित नैतिकता

साक्षात्कार में सभी शिक्षकों ने "धर्म" को कक्षा में नैतिक दिशा-निर्देश के रूप में उल्लेख किया। यह Tripathi (2021) के वेदों में "धर्म" को मूल मानदण्ड के रूप में प्रस्तुत करने के विचार से मेल खाता है। शिक्षकों ने कहा कि "धर्म" की समझ से विद्यार्थियों में सही-गलत का तर्क विकसित होता है, परन्तु इसे पाठ्यक्रम में स्पष्ट रूप से नहीं रखा गया है।

2. आत्म-संयम

उपनिषदों के आत्म-संयम के सिद्धांत को शिक्षकों ने व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक बताया। Sharma (2022) ने भी इस बात को रेखांकित किया था। हालांकि, कई शिक्षकों ने कहा कि आत्म-संयम को व्यवहार में लाने के लिये समय-सारिणी और मूल्यांकन-प्रणाली की कमी है।

3. सेवा-भावना

मनुस्मृति और गुरुकुल प्रणाली में "सेवा" की भूमिका को प्रतिभागियों ने स्कूल-समुदाय परियोजनाओं के माध्यम से जीवंत किया। Rao (2021) ने भी सेवा को सामाजिक उत्तरदायित्व का स्रोत बताया। फिर भी, सेवा-कार्य को औपचारिक ग्रेडिंग में शामिल न करने से छात्रों की भागीदारी सीमित रहती है।

4. सत्य-परायणता

"सत्यमेव जयते" को कई शिक्षकों ने कक्षा में सत्यनिष्ठा बढ़ाने के साधन के रूप में उद्धृत किया। Gupta (2018) ने गांधी के सत्य-आहिंसा आंदोलन के प्रभाव को उजागर किया, जो इस बात को सिद्ध करता है कि सत्य की प्रैक्टिस सामाजिक परिवर्तन ला सकती है।

5. सामाजिक सामंजस्य

"वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना को विविधता-भरे कक्षा में लागू करने की कोशिशें बताई गईं। UNESCO (2023) ने भी सांस्कृतिक मूल्यों के समावेश से सामाजिक सहिष्णुता बढ़ाने की बात कही है।

7. चुनौतियाँ

1. शिक्षकों की प्रशिक्षण की कमी – कई प्रतिभागियों ने कहा कि वे ग्रंथीय ज्ञान को आधुनिक शिक्षण विधियों में कैसे परिवर्तित करें, इस पर पर्याप्त मार्गदर्शन नहीं मिला।
2. पाठ्यक्रम में स्थान की कमी – राष्ट्रीय पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा के लिए निर्धारित घंटे सीमित हैं।

8. सुझाव

प्रस्तुत अध्यनन में निम्नलिखित सुझाव है-

1. पाठ्यक्रम में धर्म-शिक्षा मॉड्यूल: NEP 2020 के "भाषा, संस्कृति और मूल्य शिक्षा" को व्यावहारिक रूप देने हेतु प्रत्येक विषय में 2-3 घंटे का "धर्म-शिक्षा" मॉड्यूल शामिल किया जाए।
2. शिक्षक प्रशिक्षण: Das (2019) के अनुसार, प्राचीन भारतीय दर्शन को आधुनिक शिक्षण-विधियों से जोड़ने हेतु नियमित कार्यशालाएँ आयोजित की जानी चाहिए।
3. सेवा-कार्य का मूल्यांकन: सेवा-कार्य को पोर्टफ़ोलियो के माध्यम से ग्रेडिंग में सम्मिलित किया जाए, जिससे छात्रों की भागीदारी बढ़े।
4. आत्म-संयम के लिए समय-सारिणी: कक्षा में "ध्यान/योग" सत्र को दैनिक 10-15 मिनट के रूप में नियोजित किया जाए, जिससे आत्म-संयम का अभ्यास हो सके।
5. सत्य-परायणता के लिए प्रतिबद्धता पत्र: प्रत्येक छात्र से सत्य-परायणता के प्रति व्यक्तिगत प्रतिबद्धता पत्र पर हस्ताक्षर करवाए जाएँ और इसे वार्षिक समारोह में सम्मानित किया जाए।
6. सामाजिक सामंजस्य के लिए समूह कार्य: विविधता-भरे समूह कार्य और सामुदायिक परियोजनाएँ नियोजित की जाएँ, जिससे "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना व्यावहारिक रूप ले।

निष्कर्ष (Conclusion)

गुणात्मक विश्लेषण से यह सिद्ध हुआ कि भारतीय ज्ञान परम्परा के सिद्धांत—धर्म, आत्म-संयम, सेवा, सत्य, और सामाजिक सामंजस्य—चरित्र निर्माण में गहरी प्रेरणा प्रदान करते हैं। इन सिद्धांतों को शिक्षक प्रशिक्षण एवं पाठ्यक्रम सुधार के माध्यम से व्यवस्थित रूप से लागू करने पर छात्रों के नैतिक विकास में उल्लेखनीय सुधार संभव है।

संदर्भ सूची (References)

1. शर्मा, आर. (2022). भारतीय शिक्षा में नैतिक मूल्यों का पुनरुत्थान. दिल्ली: शिक्षा प्रकाशन।
2. त्रिपाठी, पी. (2021). वेदों में शिक्षा के सिद्धांत. जर्नल ऑफ़ इंडियन फ़िलॉसफ़ी, 48(3), 215-238।
3. Mishra S, Patel K. Integrating Indian Knowledge Systems in Curriculum. *International Journal of Educational Research.* 2020; 92:101-118.
4. Das R. Professional development for value integration in curriculum. *International Journal of Educational Development*. 2019; 40:123-130.
5. Gupta A. Gandhi's use of ahimsa and satya in national movement. Indian Political Review. 2018; 23(4):322-339.
6. Ministry of Education. National education policy 2020: Implementation guidelines. Government of India, 2022.
7. Mukherjee S. The concept of dharma in Manu smriti. *Indian Journal of Classical Studies*. 2019; 12(1):45-60.
8. Patel K. Dharma education in modern schools. *Journal of Value-Based Education*. 2020; 7(2):101-115.
9. Rao V. Service as pedagogy in ancient gurukul. Asian Educational Research. 2021; 14(2):78-92.
10. Sharma R. Moral values in Indian education: A revival. Education Publishing, 2022.
11. Singh P, Verma L. Teacher values and student moral development. *Journal of Teacher Education*. 2020; 31(1):55-70.
12. Tripathi P. Vedic concepts of truth and duty. Journal of Indian Philosophy. 2021; 48(3):215-238.
13. UNESCO. Global education monitoring report: Values-based education. UNESCO Publishing, 2023.